

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/7/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. जीवन एक संग्राम है, मत समझो यह विश्राम है,
हर दिन नई चुनौती है, हर पल एक इम्तहान है।
सुख-दुख की इस बगिया में, फूलों के संग काँटे भी हैं,
जो साहस से चलना सीखे, वही असली विजेता है।
आँधियाँ आएँगी राहों में, बाधाएँ मिलेंगी हर मोड़ पर,
मन को डगमगाने मत देना, विश्वास रखो अपने ज़ोर पर।
हर असफलता एक सीख है, हर गिरना है एक सबक,
जो गिरकर फिर उठते हैं, वही होते हैं असल में मज़बूत।
जीवन का यथार्थ यही है, संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म,
कभी मत रुकना इस राह में, चलो निरंतर, यही है कर्म।
मंजिल मिलेगी निश्चित ही, अगर इरादे पक्के हों,
धैर्य और मेहनत का दीप जलाओ –
सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे।

[8 अंक]

1(i). जीवन को संग्राम क्यों कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) जीवन विश्राम का पर्याय है।
- (B) जीवन मुस्कान का अभिप्राय है।
- (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।
- (D) जीवन सफलता का पर्याय है।

सही उत्तर: (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में जीवन को निरंतर संघर्ष और चुनौतियों का क्षेत्र बताया गया है।
- प्रतीक का अर्थ उससे जुड़ी पंक्तियों और पूरे कथ्य के आधार पर समझना चाहिए।

चरण 1: पंक्तियों से आशय पहचानें कवि कहता है, “हर दिन नई चुनौती है, हर पल एक इम्तहान है। आगे साहस से चलने वाले को असली विजेता बताया गया है। इसलिए संग्राम का आशय कठिनाइयों से साहसपूर्वक जूझना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) में चुनौती और साहस दोनों हैं, इसलिए यह पूरे भाव को समेटता है। (A) विश्राम की बात करता है, जिसका कवि ने स्पष्ट निषेध किया है। (B) मुस्कान तक सीमित है। (D) केवल सफलता बताता है और उसके लिए आवश्यक संघर्ष को छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: संग्राम का अर्थ चुनते समय चुनौती और उससे जूझने के साहस, दोनों को साथ देखें।

1(ii). 'सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे' से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) कामनाओं की पूर्ति
- (B) धन एवं वैभव की उपलब्धि
- (C) गंतव्य का मार्ग
- (D) लक्ष्यों की सिद्धि

सही उत्तर: (D) लक्ष्यों की सिद्धि

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सपने लक्ष्य और पंख उनका साकार होना व्यक्त करते हैं।
- आशय निर्धारित करते समय अभिव्यक्ति से ठीक पहले की पंक्तियाँ निर्णायक होती हैं।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ निकालें कवि पहले पक्के इरादों से मंजिल मिलने की बात करता है और फिर धैर्य तथा मेहनत का दीप जलाने को कहता है। इसी क्रम में सपनों के पंख खुलने का अर्थ प्रयासों से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त होना है।

चरण 2: निकट विकल्पों में अंतर करें (D) लक्ष्यों की सिद्धि संदर्भ का सबसे सटीक अर्थ है। (A) कामनाओं की पूर्ति व्यापक अभिव्यक्ति है; उसमें लक्ष्य के लिए धैर्य और श्रम का विशिष्ट संदर्भ स्पष्ट नहीं होता। (B) धन और वैभव तक अर्थ सीमित करता है, जिसका उल्लेख नहीं है। (C) केवल मार्ग बताता है, जबकि पंक्तियाँ मंजिल मिलने की बात करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अभिप्राय लक्ष्यों की सिद्धि है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: आशय के दो निकट विकल्प हों तो आसपास के शब्दों, यहाँ मंजिल और मेहनत, से सबसे सटीक अर्थ चुनें।

1(iii). कविता के केंद्रीय भाव को दर्शाने वाला/वाले कथन है/हैं :

- I. संघर्ष ही जीवन है।
- II. आनंद ही जीवन है।
- III. शांति ही जीवन है।

[1 अंक]

- (A) केवल I
- (B) केवल II
- (C) केवल III
- (D) I और II दोनों

सही उत्तर: (A) केवल I

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरे काव्यांश में बार-बार उभरने वाला मुख्य संदेश होता है।
- किसी एक सुखद शब्द के आधार पर कविता का मूल उद्देश्य नहीं बदला जा सकता।

चरण 1: मुख्य संदेश खोजें जीवन को संग्राम कहने से लेकर निरंतर चलने के आग्रह तक कविता संघर्ष का महत्त्व बताती है। “संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म इस विचार को सीधे व्यक्त करता है। इसलिए कथन I कविता के केंद्रीय भाव के अनुरूप है।

चरण 2: अन्य कथनों और विकल्पों को परखें कवि सुख और दुख दोनों को स्वीकार करता है, पर केवल आनंद को जीवन नहीं कहता; अतः कथन II गलत है। कविता विश्राम के स्थान पर कर्म और चुनौतियों पर बल देती है; इसलिए कथन III भी केंद्रीय भाव नहीं है। फलतः (B), (C) तथा II को जोड़ने वाला (D) अनुचित है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन I, “संघर्ष ही जीवन है, सही है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव के लिए आरंभ, बार-बार आने वाले विचार और अंतिम संदेश को एक साथ पढ़ें।

1(iv). काव्यांश के अनुसार जीवन क्या है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि जीवन का स्वरूप उसके सुख-दुख, बाधाओं और कर्म के आधार पर बताता है।
- अपठित काव्यांश के उत्तर का आधार उसी में व्यक्त विचार होना चाहिए।

चरण 1: जीवन का स्वरूप पहचानें पहली पंक्ति में जीवन को संग्राम कहा गया है। हर दिन नई चुनौती और हर पल परीक्षा होने से स्पष्ट है कि जीवन निष्क्रिय विश्राम नहीं, बल्कि सक्रिय संघर्ष है।

चरण 2: उत्तर का भाव पूरा करें सुख-दुख की बगिया में फूलों के साथ काँट होने का उल्लेख कठिनाइयों की अनिवार्यता बताता है। इन परिस्थितियों में साहस, विश्वास और निरंतर कर्म द्वारा आगे बढ़ना जीवन का सार है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश के अनुसार जीवन सुख-दुख और चुनौतियों से भरा संग्राम है, जिसमें साहसपूर्वक संघर्ष करते हुए निरंतर आगे बढ़ना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: जीवन क्या है जैसे प्रश्न में मूल प्रतीक लिखें और एक वाक्य में उसका संदर्भ स्पष्ट करें।

1(v). कवि के अनुसार कौन-से व्यक्ति मजबूत होते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में मजबूती का संबंध संकट के बाद पुनः प्रयास करने की क्षमता से है।
- असफलता को अंतिम हार मानने के स्थान पर सीख मानना कविता का महत्त्वपूर्ण संदेश है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ समझें कवि कहता है, “हर असफलता एक सीख है और “जो गिरकर फिर उठते हैं वे वास्तव में मजबूत होते हैं। यहाँ गिरना असफल होने तथा फिर उठना दोबारा साहस के साथ प्रयत्न करने का संकेत है। शारीरिक शक्ति के स्थान पर मानसिक दृढ़ता और कर्मशीलता को महत्त्व दिया गया है।

चरण 2: व्यक्ति की विशेषताएँ स्पष्ट करें ऐसे व्यक्ति बाधाओं या असफलताओं से अपना विश्वास नहीं खोते। वे अपनी चूक से सबक लेते हैं, धैर्य बनाए रखते हैं और लक्ष्य के लिए फिर काम शुरू करते हैं। कविता में राह की आँधियों और बाधाओं के बावजूद मन को डगमगाने न देने का आग्रह भी इसी दृढ़ता को पुष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार वे व्यक्ति मजबूत होते हैं जो असफलता से सीखते हैं और गिरकर फिर उठ खड़े होते हैं। वे बाधाओं से घबराकर रुकते नहीं, बल्कि साहस, आत्मविश्वास और धैर्य से पुनः प्रयास करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं।

त्वरित सुझाव: मजबूत व्यक्ति के उत्तर में केवल साहस न लिखें; असफलता से सीखना और फिर प्रयास करना भी जोड़ें।

हल:**अवधारणा:**

- कविता जीवन के यथार्थ को चुनौतियों के बीच संघर्षशील बने रहने से जोड़ती है।
- संघर्ष, निरंतर कर्म, धैर्य और मेहनत को कविता में परस्पर संबंधित बताया गया है।

चरण 1: यथार्थ संबंधी पंक्ति पहचानें “जीवन का यथार्थ यही है, संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म में कवि अपना विचार सीधे कहता है। जीवन में सुख के साथ दुख और फूलों के साथ काँटे हैं। हर मोड़ पर बाधाएँ मिल सकती हैं; इसलिए कठिनाइयों से रहित जीवन की अपेक्षा काव्यांश के संदेश के अनुकूल नहीं है।

चरण 2: संघर्ष को कर्म से जोड़ें अगली पंक्ति में कवि रुकने के स्थान पर निरंतर चलने को कर्म बताता है। इससे स्पष्ट है कि जीवन का यथार्थ केवल कठिनाइयों का होना नहीं, बल्कि उन्हें स्वीकार कर उनसे जूझते रहना भी है। पक्के इरादे, धैर्य और मेहनत से मंजिल मिलने का विश्वास इसी सक्रिय दृष्टि को पूर्ण करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन में आने वाली चुनौतियों के बीच संघर्ष और निरंतर कर्म को जीवन का यथार्थ माना है। सुख-दुख तथा बाधाओं से घबराए बिना धैर्य, मेहनत और दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना ही जीवन का सच्चा स्वरूप है।

त्वरित सुझाव: यथार्थ पूछे जाने पर संघर्ष वाली पंक्ति को निरंतर कर्म के संदेश से जोड़कर उत्तर पूरा करें।

2. भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पटकथा में गाँवों की अहम् भूमिका है। बदलते समय के साथ, “डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था” एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है। यह व्यवस्था न केवल तकनीकी विकास का संकेत है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है।

डिजिटल इंडिया मिशन के तहत अब ग्राम पंचायतों में इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। किसान अब मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाएँ और बाज़ार के दाम जान सकते हैं। इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है।

ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस ने पारदर्शिता बढ़ाई है। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ अब ऑनलाइन हो गई हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अब भी हैं – जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति, फिर भी यह बदलाव धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है। यदि सही दिशा में प्रयास जारी रहे, तो डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर कर सकती है।

[10 अंक]

2(i). गद्यांश में ग्रामीण भारत के हृदय में नवीन विकास के संकेत का प्रतीक किसे कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) तकनीकी विकास की व्यवस्था
- (B) सामाजिक विकास की व्यवस्था
- (C) आर्थिक विकास की व्यवस्था
- (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

सही उत्तर: (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

हल:**अवधारणा:**

- गद्यांश में किसी व्यवस्था के लिए प्रयुक्त विशेष कथन को उसी व्यवस्था से जोड़ना चाहिए।
- संपूर्ण विचार और उसके किसी एक पक्ष में अंतर करना सही विकल्प चुनने में सहायक है।

चरण 1: संबंधित वाक्य पहचानें पहले अनुच्छेद में स्पष्ट कहा गया है कि बदलते समय के साथ “डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है। इसी व्यवस्था को तकनीकी विकास और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बताया गया है।

चरण 2: चारों विकल्पों की जाँच करें (D) मूल वाक्य में नामित पूरी व्यवस्था है। (A) केवल तकनीकी पक्ष, (B) केवल सामाजिक पक्ष और (C) केवल आर्थिक पक्ष बताता है। ये तीनों उसके आंशिक पहलू हैं, जबकि प्रश्न नई दिशा के प्रतीक के रूप में उल्लिखित व्यवस्था पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष नवीन विकास के संकेत का प्रतीक डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक किसे कहा गया है पूछे जाने पर गद्यांश में सीधे नामित संपूर्ण व्यवस्था को पहचानें।

2(ii). डिजिटल व्यवस्था से किसानों को क्या लाभ हुआ है ?

[1 अंक]

- (A) कर देने में सुविधा होना
 - (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना
 - (C) अनाज भंडारण की सुविधा होना
 - (D) मज़दूरी में वृद्धि होना
- सही उत्तर:** (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में उत्तर के लिए दिए गए प्रत्यक्ष तथ्य को प्राथमिकता दी जाती है।
- किसी सुविधा और उससे उत्पन्न परिणाम के बीच संबंध पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: लाभ का स्पष्ट प्रमाण खोजें गद्यांश में किसान मोबाइल ऐप्स से मौसम, फसल बीमा योजनाओं और बाजार के दाम की जानकारी प्राप्त करते हैं। अगले ही वाक्य में कहा गया है कि इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है। इसलिए यही प्रश्न का प्रत्यक्ष उत्तर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को अलग करें (B) गद्यांश में स्पष्ट रूप से दिया गया परिणाम है। (A) कर देने की सुविधा का उल्लेख नहीं है। (C) अनाज भंडारण की सुविधा नहीं बताई गई है। (D) मजदूरी में वृद्धि का भी कोई कथन नहीं है। ये बातें अनुमान हो सकती हैं, पर इस गद्यांश से सिद्ध नहीं होतीं।

चरण 3: निष्कर्ष डिजिटल व्यवस्था से किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: लाभ पूछने वाले प्रश्न में इससे जैसे संकेत-शब्द के बाद दिया गया परिणाम ध्यान से पढ़ें।

2(iii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन I : ई-गवर्नेंस सिस्टम में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं।

कथन II : ई-गवर्नेंस सिस्टम में पारदर्शिता के कारण सरकारी जानकारी एवं सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच में वृद्धि हुई है।

कथन III : ई-गवर्नेंस सिस्टम ग्रामीण भारत को आधुनिक और सशक्त बना रहा है।

कथन IV : ई-गवर्नेंस सिस्टम समय और धन का अपव्यय करता है।

[1 अंक]

(A) केवल कथन I और IV सही हैं।

(B) केवल कथन III और IV सही हैं।

(C) केवल कथन II और III सही हैं।

(D) केवल कथन I और II सही हैं।

सही उत्तर: (C) केवल कथन II और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- कथनों की सत्यता गद्यांश में दिए गए तथ्यों से जाँची जाती है।
- गद्यांश ई-गवर्नेंस के कारण पारदर्शिता और ग्रामीण सशक्तिकरण की पुष्टि करता है।

चरण 1: समर्थित कथन पहचानें कथन II सही है, क्योंकि जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन और सब्सिडी जैसी सेवाएँ ऑनलाइन होने तथा पारदर्शिता बढ़ने का उल्लेख है। कथन III भी सही है; गद्यांश स्पष्ट करता है कि यह बदलाव ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है।

चरण 2: अन्य कथनों और विकल्पों को जाँचें कथन I में कही गई सुरक्षा संबंधी चिंता का गद्यांश में उल्लेख नहीं है। इसलिए उसे इस पाठ के आधार पर सही नहीं माना जा सकता। कथन IV का समय और धन के अपव्यय वाला दावा भी पाठ से समर्थित नहीं है। अतः I अथवा IV को सही बताने वाले विकल्प (A), (B) और (D) अनुपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन II और III सही हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन सामान्य ज्ञान से सही लगे, तब भी अपठित गद्यांश में उसका स्पष्ट आधार अवश्य खोजें।

2(iv). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रमुख उद्देश्य पहचानने के लिए पूरे गद्यांश के केंद्रीय भाव को आधार बनाते हैं।
- तकनीकी सुविधाएँ यहाँ सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का साधन हैं।

चरण 1: केंद्रीय भाव पहचानें गद्यांश के आरंभ में डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बताया गया है। अतः उद्देश्य बताते समय ग्रामीण जीवन में होने वाले व्यापक सुधार को प्रमुखता देनी चाहिए।

चरण 2: समापन से पुष्टि करें अंतिम पंक्ति इस व्यवस्था की दिशा स्पष्ट करती है : भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर ले जाना। इंटरनेट, शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं की उपलब्धता इसी व्यापक उद्देश्य की पूर्ति करती है।

चरण 3: निष्कर्ष डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य तकनीक के माध्यम से ग्रामीणों का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण करना तथा आत्मनिर्भर और समावेशी समाज का निर्माण करना है।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य के उत्तर में साधनों की सूची देने के साथ गद्यांश के अंतिम लक्ष्य को अवश्य शामिल करें।

2(v). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था से ग्राम पंचायतों में कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तथ्यपरक प्रश्न में गद्यांश में उल्लिखित सेवाओं का स्पष्ट और व्यवस्थित उल्लेख आवश्यक है।
- डिजिटल सेवाओं में संचार, भुगतान, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा प्रशासन की सुविधाएँ आती हैं।

चरण 1: मुख्य डिजिटल सुविधाएँ पहचानें गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में डिजिटल इंडिया मिशन के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में मिलने वाली सुविधाओं का सीधा उल्लेख है। वहाँ इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। टेलीमेडिसिन स्वास्थ्य संबंधी सेवा है, जबकि ऑनलाइन शिक्षा शैक्षिक सुविधा है।

चरण 2: ई-गवर्नेंस की सेवाएँ जोड़ें अगले अनुच्छेद में प्रशासनिक सेवाओं का विवरण मिलता है। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ ऑनलाइन हो गई हैं। उत्तर में इन उदाहरणों को मुख्य सुविधाओं से जोड़ने पर ग्राम पंचायत स्तर की डिजिटल व्यवस्था का पूरा स्वरूप स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्राम पंचायतों में इंटरनेट, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ मिल रही हैं। साथ ही जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध हो रही हैं।

त्वरित सुझाव: सेवाओं को संचार, भुगतान, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन के क्रम में याद करने से कोई उदाहरण नहीं छूटेगा।

2(vi). किसानों को डिजिटल तकनीक के तहत मोबाइल ऐप के माध्यम से किन-किन सुविधाओं की प्राप्ति हो रही है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर किसान संबंधी अनुच्छेद में दी गई सूचनाओं पर आधारित होना चाहिए।
- सुविधाओं और उनके परिणाम को अलग-अलग पहचानने से उत्तर स्पष्ट बनता है।

चरण 1: मोबाइल ऐप की सुविधाएँ पहचानें गद्यांश में बताया गया है कि किसान मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वे फ़सल बीमा योजनाओं की जानकारी भी ले सकते हैं तथा बाज़ार में प्रचलित फ़सलों के दाम जान सकते हैं। प्रश्न में किन-किन सुविधाओं के बारे में पूछा गया है, इसलिए इन तीनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: इन सुविधाओं का लाभ स्पष्ट करें गद्यांश इन सुविधाओं के बाद बताता है कि किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम हो गई है। अतः जानकारी की सीधी उपलब्धता और बिचौलियों पर निर्भरता में कमी को परस्पर संबंधित रूप में समझना चाहिए। पाठ ऐप द्वारा बीमा राशि मिलने या फ़सल बेचने की सीधी व्यवस्था का दावा नहीं करता, इसलिए ऐसा अतिरिक्त तथ्य नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मोबाइल ऐप के माध्यम से किसानों को मौसम, फ़सल बीमा योजनाओं और बाज़ार के दामों की जानकारी मिल रही है। इससे बिचौलियों पर उनकी निर्भरता कम हुई है।

त्वरित सुझाव: मौसम, बीमा योजनाएँ और बाज़ार भाव : इन तीन सूचनाओं के बाद पाठ में दिया गया लाभ लिखें।

2(vii). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को सफल बनाने में कौन-सी मुख्य चुनौतियाँ हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चुनौतियों के उत्तर में गद्यांश में उल्लिखित बाधाओं का ही चयन करें।
- डिजिटल व्यवस्था की सफलता के लिए उपयोग का ज्ञान तथा तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता दोनों आवश्यक हैं।

चरण 1: तीनों प्रमुख बाधाएँ पहचानें गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति को मुख्य चुनौतियाँ बताया गया है। डिजिटल साक्षरता की कमी उपयोगकर्ताओं के ज्ञान से जुड़ी बाधा है, जबकि इंटरनेट और बिजली की समस्याएँ सुविधाओं के नियमित उपयोग को प्रभावित करती हैं।

चरण 2: प्रश्न के अनुसार उत्तर व्यवस्थित करें प्रश्न मुख्य चुनौतियाँ पूछता है, इसलिए उत्तर में तीनों बाधाएँ स्पष्ट रूप से लिखना पर्याप्त और आवश्यक है। इनके साथ यह समझा जा सकता है कि डिजिटल साधनों के उपयोग का ज्ञान कम होने तथा संपर्क और बिजली में बाधा आने से ऑनलाइन सेवाओं का लाभ लेना कठिन होता है। गद्यांश में सुरक्षा अथवा उपकरणों की कीमत को मुख्य चुनौती नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को सफल बनाने की मुख्य चुनौतियाँ डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति हैं। ये बाधाएँ ऑनलाइन सुविधाओं के प्रभावी उपयोग को प्रभावित करती हैं।

त्वरित सुझाव: चुनौतियाँ लिखते समय ज्ञान, इंटरनेट और बिजली : इन तीन आधारों से गद्यांश की सूची जाँच लें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा-शैली के स्तर पर काफी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य और टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम है; समाचार का अर्थ सुनते ही स्पष्ट होना चाहिए।
- प्रसारण की भाषा सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट, बोलचाल के निकट और सहज उच्चारण वाली होनी चाहिए।

चरण 1: माध्यम की आवश्यकता समझें रेडियो और टेलीविज़न के समाचार प्रसारण के साथ आगे बढ़ते रहते हैं। श्रोता समाचार-पत्र की तरह पिछली पंक्ति पर लौटकर उसे दोबारा नहीं पढ़ सकता। इसलिए लंबे, उलझे वाक्य, कठिन शब्द और अस्पष्ट अभिव्यक्ति अर्थ ग्रहण करने में बाधा बनते हैं। समाचारों को विभिन्न आयु और शैक्षिक पृष्ठभूमि के लोग सुनते हैं, इसलिए भाषा व्यापक रूप से समझ में आने वाली होनी चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखें रेडियो और टेलीविज़न के समाचार सुनते ही समझने पड़ते हैं; श्रोता पिछली पंक्ति दोबारा नहीं पढ़ सकता। इसलिए भाषा सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त और बोलचाल की होनी चाहिए। छोटे वाक्य तथा सहज उच्चारण वाले शब्द समाचार को तुरंत समझने में सहायक होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष तात्कालिक श्रवण-बोध और व्यापक श्रोता-वर्ग की आवश्यकताओं के कारण प्रसारण समाचारों में भाषा-शैली संबंधी विशेष सावधानी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषताएँ गिनाने से पहले उनका कारण लिखें : सुनते समय तुरंत अर्थ समझ में आना चाहिए।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

टी.वी. पर खबरों के प्रसारण के दौरान प्रयुक्त चरण 'लाइव' से आप क्या समझते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न में दृश्य और ध्वनि के माध्यम से घटनास्थल की तात्कालिक जानकारी दी जाती है।
- लाइव में घटना के घटित होने और उसके प्रसारण का समय लगभग एक ही होता है।

चरण 1: लाइव का अर्थ समझिए लाइव का अर्थ है घटनास्थल से घटना का सीधा प्रसारण। संवाददाता मौके पर उपस्थित रहकर वहाँ

की स्थिति और घटनाक्रम दर्शकों को बताता है। इससे दर्शक घटना के दृश्य तथा संबंधित लोगों की प्रतिक्रियाएँ उसी समय देख और सुन सकते हैं।

चरण 2: समाचार में इसकी भूमिका पहचानिए स्टूडियो का समाचार प्रस्तोता घटनास्थल पर उपस्थित संवाददाता से सीधे जुड़ता है और उससे ताजा जानकारी लेता है। पहले से रिकॉर्ड की गई रिपोर्ट दिखाना लाइव नहीं है। इसका मुख्य आधार घटना की तात्कालिकता और मौके से सीधा संपर्क है।

चरण 3: निष्कर्ष लाइव में घटनास्थल से समाचार का सीधा प्रसारण किया जाता है। संवाददाता मौके पर उपस्थित रहकर घटना की ताजा जानकारी देता है और स्टूडियो के समाचार प्रस्तोता के प्रश्नों का उत्तर देता है। दर्शक घटना को उसी समय देख-सुन पाते हैं।

त्वरित सुझाव: लाइव की पहचान बताते समय घटनास्थल, सीधा प्रसारण और उसी समय की जानकारी—इन तीन बातों को जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली कौन-सी है ? इसके उपयोग पर प्रकाश डालिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का संगठन तथ्यों के महत्व के आधार पर किया जाता है।
- उल्टा पिरामिड शैली में सबसे महत्वपूर्ण सूचना पहले और कम महत्वपूर्ण विवरण अंत में आते हैं।

चरण 1: लोकप्रिय शैली का नाम बताइए समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें घटना के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य आरंभ के मुखड़े में रखे जाते हैं। आगे के अनुच्छेदों में क्रमशः उनका विस्तार, पृष्ठभूमि और अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है।

चरण 2: इसके उपयोग को स्पष्ट कीजिए इस शैली से पाठक शुरुआत में ही समाचार का सार जान लेता है। समय कम होने पर भी उसे मुख्य जानकारी मिल जाती है। स्थान की कमी होने पर संपादक अंतिम अनुच्छेद हटा सकता है, क्योंकि समाचार के अनिवार्य तथ्य आरंभ में सुरक्षित रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य पहले, फिर उनका विस्तार तथा अंत में कम महत्वपूर्ण विवरण दिए जाते हैं। इससे पाठक मुख्य सूचना तुरंत पा लेता है और संपादन भी सुविधाजनक होता है।

त्वरित सुझाव: उल्टा पिरामिड का क्रम याद रखें: मुख्य तथ्य, विस्तार, पृष्ठभूमि; अंत से काटने पर मूल सूचना बचनी चाहिए।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में कारोबार और अर्थजगत से जुड़ी खबरों को विशेष स्थान क्यों दिया जाता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता कारोबार, बाजार तथा अर्थव्यवस्था से संबंधित सूचनाएँ देती है।
- आर्थिक घटनाओं का प्रभाव केवल व्यापारियों पर नहीं, सामान्य नागरिकों के जीवन पर भी पड़ता है।

चरण 1: जनजीवन से संबंध समझाइए महँगाई, रोजगार, उत्पादन, बैंकिंग और सरकारी आर्थिक नीतियाँ लोगों की आय, खर्च तथा जीवन-स्तर को प्रभावित करती हैं। इसलिए कारोबार और अर्थजगत की खबरें सामान्य पाठक के लिए भी उपयोगी हैं। इनके माध्यम से पाठक अपने आसपास के आर्थिक परिवर्तनों को समझता है।

चरण 2: विशेष स्थान देने का कारण बताइए व्यापारियों, निवेशकों और उपभोक्ताओं को बाजार की स्थिति तथा नीतिगत बदलावों की विश्वसनीय जानकारी चाहिए। आर्थिक समाचार उनकी समझ विकसित करते हैं और निर्णय लेने में सहायक होते हैं। इसी व्यापक जनहित और व्यावहारिक उपयोगिता के कारण समाचार पत्र-पत्रिकाएँ इन्हें विशेष स्थान देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कारोबार और अर्थजगत की गतिविधियाँ महँगाई, रोजगार, आय तथा उपभोग को प्रभावित करती हैं। इनकी खबरें पाठकों को बाजार और आर्थिक नीतियों की जानकारी देती हैं। व्यापारियों, निवेशकों और सामान्य नागरिकों के निर्णयों में उपयोगी होने के कारण इन्हें विशेष स्थान मिलता है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय आर्थिक खबरों को महँगाई, रोजगार और पाठक के रोजमर्रा के निर्णयों से जोड़ें।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों का अपना स्तंभ किसे और क्यों माना जाता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में पाठकों की प्रतिक्रिया और जनसमस्याओं को स्थान देना आवश्यक है।
- संपादक के नाम पत्र स्तंभ पाठकों को अपने विचार सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने का अवसर देता है।

चरण 1: पाठकों के स्तंभ की पहचान कीजिए समाचार पत्र-पत्रिकाओं में संपादक के नाम पत्र को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है। इसमें पाठक पत्र लिखकर अपनी राय, प्रतिक्रिया, शिकायत और सुझाव भेजते हैं। इस प्रकार समाचारपत्र में उनकी आवाज को भी स्थान मिलता है।

चरण 2: अपना स्तंभ कहने का कारण समझाइए इस स्तंभ में पाठक प्रकाशित समाचारों या लेखों पर प्रतिक्रिया देने के साथ स्थानीय तथा सार्वजनिक समस्याएँ भी उठाते हैं। इससे पाठकों और संपादकीय विभाग के बीच संवाद स्थापित होता है। नागरिकों की बात संबंधित अधिकारियों और व्यापक समाज तक पहुँच सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के नाम पत्र को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है। इसमें पाठक समाचारों और लेखों पर प्रतिक्रिया देते हैं तथा जनसमस्याएँ, शिकायतें और सुझाव रखते हैं। यह उन्हें अभिव्यक्ति का मंच देता है और समाचारपत्र से उनका सीधा संवाद स्थापित करता है।

त्वरित सुझाव: स्तंभ का नाम लिखकर उसके दो काम स्पष्ट करें: पाठकीय प्रतिक्रिया और जनसमस्याओं की अभिव्यक्ति।

4(i). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का विचारपूर्ण, संवेदनशील और मौलिक प्रस्तुतीकरण किया जाता है। प्रभावी शीर्षक तथा आरंभ, विस्तार और समापन के बीच स्वाभाविक संबंध होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में केंद्रीय विचार स्पष्ट रखा जाता है। विषय से जुड़े ठोस उदाहरण और सार्थक निष्कर्ष लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। अनावश्यक विस्तार और घिसे-पिटे कथनों से बचना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति निर्धारित करना आरंभ में मोबाइल से घिरे मनुष्य का परिचित दृश्य, मध्य में संपर्क और सूचना की सुविधा के साथ अकेलेपन तथा दिखावे की समस्या और अंत में विवेकपूर्ण उपयोग का सुझाव आएगा। भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण होगी। छोटे

अनुच्छेदों में विचारों का क्रम बनाया जाएगा। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, विषय-पंक्ति या संबोधन नहीं दिया जाएगा। शीर्षक के बाद सीधे लेख का आरंभ होगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल की चमक चेहरे पर पड़ती है। शुभकामनाओं के संदेश पढ़ते हुए हम पास बैठे अपनों को नमस्कार करना भूल जाते हैं। सोशल मीडिया ने दूरियाँ घटाई हैं; जानकारी, शिक्षा और सहायता को सहज बनाया है। फिर भी लगातार बजती सूचनाएँ हमारे समय और एकाग्रता को चुरा रही हैं। दूसरों की चमकती तस्वीरों से अपने साधारण जीवन की तुलना करके हम अनायास उदास हो उठते हैं। मित्रों की सूची लंबी होती जाती है, लेकिन मन की बात सुनने वाला साथी नहीं मिलता। आवश्यकता इस संसार से भागने की नहीं, इसके विवेकपूर्ण उपयोग की है। निश्चित समय पर मोबाइल रखकर परिवार, पुस्तक और प्रकृति से जुड़ें। तकनीक हमारी सहायक बने, जीवन की संचालक नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सोशल मीडिया की सुविधाओं का लाभ उठाते हुए समय, वास्तविक संबंधों और मानसिक संतुलन की रक्षा करनी चाहिए। ऊपर दिया गया आदर्श लेख लगभग 120 शब्दों में विषय को पूर्ण करता है।

त्वरित सुझाव: आरंभ किसी ठोस विचार या परिचित दृश्य से करें और अंत उसी से निकलने वाले संदेश से करें; विषय के सभी पहलुओं की केवल सूची न बनाएँ।

4(ii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

भारत की युवा शक्ति

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का विचारपूर्ण, संवेदनशील और मौलिक प्रस्तुतीकरण किया जाता है। प्रभावी शीर्षक तथा आरंभ, विस्तार और समापन के बीच स्वाभाविक संबंध होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में केंद्रीय विचार स्पष्ट रखा जाता है। विषय से जुड़े ठोस उदाहरण और सार्थक निष्कर्ष लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। अनावश्यक विस्तार और धिसे-पिटे कथनों से बचना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति निर्धारित करना आरंभ में युवाओं की वर्तमान भूमिका, मध्य में उनकी क्षमताएँ और आवश्यक अवसर तथा अंत में युवाओं, समाज और शासन की साझा जिम्मेदारी रखी जाएगी। भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण होगी। छोटे अनुच्छेदों में विचारों का क्रम बनाया जाएगा। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, विषय-पंक्ति या संबोधन नहीं दिया जाएगा। शीर्षक के बाद सीधे लेख का आरंभ होगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख भारत की युवा शक्ति

भारत का युवा केवल भविष्य की आशा नहीं, वर्तमान के निर्माण का सक्रिय सहभागी है। उसकी आँखों में सपने हैं और हाथों में उन्हें साकार करने की क्षमता। खेतों में नई तकनीक अपनाने से लेकर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करने तक, युवा हर क्षेत्र में परिवर्तन ला रहे हैं। किंतु यह ऊर्जा तभी सार्थक होगी जब उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर मिलेंगे। बेरोजगारी, नशा और दिशाहीनता इस शक्ति को कमजोर करते हैं। युवाओं को अधिकारों के साथ अपने कर्तव्य भी पहचानने होंगे। ईमानदार श्रम, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक सद्भाव से वे देश को आगे बढ़ा सकते हैं। समाज उनकी पहल को प्रोत्साहन दे और शासन अवसर प्रदान करे। युवा जागेंगे तो भारत की संभावनाएँ उपलब्धियों में बदलेंगी।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की युवा शक्ति शिक्षा, कौशल, अवसर और उत्तरदायित्व के सहयोग से राष्ट्र की प्रगति का आधार बन सकती है। ऊपर दिया गया आदर्श लेख लगभग 120 शब्दों में विषय को पूर्ण करता है।

त्वरित सुझाव: आरंभ किसी ठोस विचार या परिचित दृश्य से करें और अंत उसी से निकलने वाले संदेश से करें; विषय के सभी पहलुओं की केवल सूची न बनाएँ।

4(iii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े अनुभव, दृश्य और विचार सहज तथा मौलिक भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। यहाँ बदलती दिनचर्या के लाभ और चुनौतियाँ दोनों दिखानी हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक आरंभ, उदाहरणों से विषय का विस्तार और सार्थक समापन रखें। शीर्षक विषय के अनुरूप हो और विचारों में क्रम बना रहे।

चरण 1: लेख का रूप और विचार-क्रम पहले सुबह के परिचित दृश्य से बदलती जीवन-शैली का संकेत दें। फिर तकनीक से मिली सुविधा, बदलते खान-पान और संबंधों पर उसके प्रभाव का उल्लेख करें। अंत में स्वास्थ्य, प्रकृति और आत्मीय संबंधों के साथ संतुलन बनाने की बात कहें। खिड़की और स्क्रीन का आरंभिक दृश्य पाठक को तुरंत विषय से जोड़ता है। भोजन और खेल के उदाहरण परिवर्तन को ठोस बनाते हैं। सुविधा और संवेदना का अंतिम संबंध लेख को विचारपूर्ण समाप्ति देता है। लेख को केवल सुविधाओं की सूची या तकनीक की निंदा बनाने के बजाय अनुभवपूर्ण और संतुलित रखें।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली

सुबह आँख खुलते ही अब खिड़की से पहले मोबाइल की स्क्रीन चमकती है। अलार्म, समाचार, पढ़ाई और खरीदारी—सब हमारी हथेली में समा गए हैं। तकनीक ने समय बचाया है और दूर बैठे अपनों से बातचीत आसान बनाई है। किंतु इसी सुविधा के बीच जीवन की रफ्तार इतनी बढ़ी कि साथ बैठकर भोजन करना भी कठिन लगने लगा। घर का ताजा भोजन कई बार पैकेटों में बदल जाता है और खेल का मैदान स्क्रीन में सिमट जाता है। आधुनिकता हमें अवसर देती है, पर उसका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। थोड़ा पैदल चलना, नियमित व्यायाम करना, परिवार से संवाद बनाए रखना और प्रकृति के निकट जाना हमारी दिनचर्या का हिस्सा बने। जीवन तभी सुंदर होगा, जब सुविधा के साथ संवेदना भी बची रहेगी।

चरण 3: निष्कर्ष यह लेख बदलती दिनचर्या का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हुए आधुनिक सुविधाओं और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय पर किसी छोटे दैनिक दृश्य से आरंभ करें और अंत में उसी जीवन से जुड़ा व्यावहारिक संदेश दें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवादों को किस प्रकार प्रभावशाली बनाया जा सकता है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक वर्णन कर सकता है, जबकि नाटक में पात्रों के संवाद और अभिनय कथा को आगे बढ़ाते हैं। इसलिए संवाद मंच पर बोलने और सुनने योग्य होने चाहिए।
- प्रभावशाली संवाद पात्र के स्वभाव और परिस्थिति के अनुकूल रहते हुए कथानक, संघर्ष तथा भावों को प्रकट करते हैं। अनावश्यक विस्तार उनकी प्रभावशीलता घटाता है।

चरण 1: संवाद रचना के प्रमुख आधार कथा के मूल आशय और पात्रों के संबंध सुरक्षित रखें। उत्तर में भाषा की सहजता, पात्रानुकूल शब्दावली, संक्षिप्तता तथा नाटकीयता का संबंध स्पष्ट करें। कथावाचक के लंबे विवरणों को सीधे भाषण में जस का तस रख देना उचित नहीं है। परिस्थिति के अनुरूप पात्र की प्रतिक्रिया, प्रश्न और प्रत्युत्तर के माध्यम से आवश्यक जानकारी दी जा सकती है। संवादों में भाव के अनुसार ठहराव या मौन भी उपयोगी होता है; पात्रों को अस्वाभाविक रूप से सारी सूचना बोलने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद पात्रों की आयु, शिक्षा, परिवेश और स्वभाव के अनुकूल होने चाहिए। भाषा सहज, बोलचाल की और मंच पर स्पष्ट सुनाई देने योग्य हो। संवाद छोटे, सार्थक और परस्पर जुड़े हों, ताकि

कथानक आगे बढ़े तथा पात्रों का अंतर्द्वंद्व और आपसी संघर्ष उभरें। कथावाचक के लंबे विवरणों को आवश्यकतानुसार पात्रों की बातचीत और क्रिया में बदलना चाहिए। भावानुकूल विराम, मौन तथा प्रश्नोत्तर संवादों को जीवंत बनाते हैं। अनावश्यक दोहराव और उपदेशात्मक भाषण से बचना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रानुकूल भाषा, संक्षिप्तता और कथा को आगे बढ़ाने वाली नाटकीय बातचीत संवादों को प्रभावशाली बनाती है।

त्वरित सुझाव: संवाद लिखकर बोलकर पढ़ें; जो वाक्य पात्र सहजता से न बोल सके, उसे सरल और स्वाभाविक बनाएँ।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

“विवरण-विवेचन के सुसंबद्ध होने के साथ-साथ उसका (विषय-वस्तु का) सुसंगत होना भी अच्छे लेखन की विशेषता है।” उदाहरण सहित इस कथन की पुष्टि कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अच्छे लेखन में सुसंबद्धता का अर्थ विचारों का क्रमबद्ध जुड़ाव है।
- सुसंगति का अर्थ सभी विचारों का मूल विषय और उद्देश्य के अनुकूल होना है।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा पहले सुसंबद्धता और सुसंगति का अंतर स्पष्ट करें। फिर एक ही विषय के उदाहरण से बताएँ कि वाक्यों का परस्पर जुड़ना पर्याप्त नहीं है; उनका विषय से संबंधित होना भी आवश्यक है। उदाहरण में किसी असंबद्ध प्रसंग को जोड़ने का प्रभाव भी बताएँ।

चरण 2: उदाहरण की जाँच जल-संरक्षण वाले उदाहरण में कारणों से उपायों तक बढ़ना विचारों का तार्किक क्रम बनाता है। इससे पाठक समझ पाता है कि समस्या क्यों उत्पन्न हुई और उसका समाधान कैसे संभव है। वहीं सभी विवरणों का पानी की समस्या से जुड़ा रहना विषय की एकता बनाए रखता है। केवल जोड़ने वाले शब्द लगा देने से अप्रासंगिक बात उपयोगी नहीं हो जाती। इसलिए अंतिम उत्तर में क्रम और प्रासंगिकता को अलग-अलग पहचानना चाहिए।

चरण 3: नमूना उत्तर अच्छे लेखन में विवरण और विवेचन का क्रमबद्ध जुड़ाव सुसंबद्धता है, जबकि प्रत्येक विचार का मूल विषय के अनुकूल होना सुसंगति है। जैसे, जल-संरक्षण पर लिखते समय जल-संकट, उसके कारण और बचाव के उपाय क्रम से आएँ तो लेख सुसंबद्ध होगा। वर्षाजल-संचय तथा पानी की बचत जैसे प्रासंगिक विचार उसे सुसंगत बनाएँगे। इसके बीच क्रिकेट मैच का विवरण जोड़ना विषय से भटकना होगा। अतः विचारों में तार्किक संबंध के साथ विषयगत एकरूपता भी आवश्यक है; तभी लेखन स्पष्ट, प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष सुसंबद्धता विचारों को क्रम देती है और सुसंगति उन्हें मूल विषय से जोड़े रखती है। अच्छे लेखन के लिए दोनों आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उदाहरण लिखते समय एक प्रासंगिक और एक अप्रासंगिक विवरण रखकर सुसंबद्धता तथा सुसंगति का अंतर स्पष्ट करें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक में संवादों और ध्वनि संकेतों के महत्त्व को समझाकर लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; श्रोता दृश्य देखकर नहीं, सुनकर घटनाएँ समझता है।
- संवाद कथानक और चरित्र उभारते हैं; ध्वनि संकेत स्थान, गतिविधि और वातावरण का आभास कराते हैं।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा उत्तर का आरंभ रेडियो के श्रव्य स्वरूप से करें। संवादों के माध्यम से पात्र, संबंध और कथा स्पष्ट होने की बात लिखें। फिर उपयुक्त ध्वनियों के उदाहरण देकर बताएँ कि वे दृश्य के अभाव की पूर्ति कैसे करती हैं।

चरण 2: श्रव्य प्रभाव की जाँच ध्वनि संकेत केवल सजावट के लिए नहीं लगाए जाते; उन्हें घटना समझाने में सहायक होना चाहिए। उदाहरण के लिए दस्तक के बाद पात्र का दरवाजा खोलने संबंधी संवाद श्रोता को स्थिति स्पष्ट कर सकता है। स्वर के उतार-चढ़ाव से चिंता, खुशी या भय व्यक्त किया जा सकता है। बहुत लंबे और बनावटी संवाद सुनकर समझना कठिन होता है। अनावश्यक ध्वनियाँ भी ध्यान भटकाती हैं, इसलिए दोनों साधनों का संयमित और उद्देश्यपूर्ण प्रयोग आवश्यक है।

चरण 3: नमूना उत्तर रेडियो नाटक में दृश्य दिखाई नहीं देते, इसलिए संवाद और ध्वनि संकेत विशेष महत्त्व रखते हैं। संवादों से कथा आगे बढ़ती है तथा पात्रों के स्वभाव, संबंध और मनोभाव स्पष्ट होते हैं। वे छोटे, स्वाभाविक और सुनते ही समझ आने वाले होने चाहिए। ध्वनि संकेत स्थान, समय, गतिविधि और वातावरण का आभास देते हैं; जैसे रेल की सीटी स्टेशन तथा दरवाजे की दस्तक आगमन का संकेत देती है। संवाद और ध्वनियों का उचित समन्वय श्रोता के मन में दृश्य रचकर नाटक को प्रभावी बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष संवाद कथा और पात्रों को व्यक्त करते हैं तथा ध्वनि संकेत श्रव्य वातावरण रचते हैं। इनका संतुलित प्रयोग रेडियो नाटक को जीवंत बनाता है।

त्वरित सुझाव: संवाद के साथ पात्र और कथानक का काम तथा ध्वनि के साथ वातावरण का काम लिखें; दोनों के ठोस उदाहरण दें।

6. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्योंकि इस करतब पर मुझे

साफ़ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हारकर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोक दिया।

[5 अंक]

6(i). कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कॉलम-I	कॉलम-II
1. बात का पेंच खोलना	(i) बात का प्रभावहीन हो जाना
2. बात की चूड़ी मर जाना	(ii) बात में कसावट का न होना
3. पेंच को कील की तरह ठोक देना	(iii) बात को सहज और स्पष्ट करना

[1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

सही उत्तर: (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- कवि ने भाषा की सहज अभिव्यक्ति को पेंच खोलने और अभिव्यक्ति बिगड़ने को चूड़ी मरने के रूपक से समझाया है।
- मिलान में प्रत्येक रूपक का प्रसंगानुकूल अर्थ लेना चाहिए।

चरण 1: तीनों अभिव्यक्तियों का मिलान बात का पेंच खोलने का अर्थ उलझन दूर करके बात को सहज और स्पष्ट करना है, इसलिए 1 का संबंध (iii) से है। बात की चूड़ी मर जाने पर कथन प्रभावहीन हो जाता है, इसलिए 2 का संबंध (i) से है। पेंच को कील की तरह ठोकना उचित ढंग से बात साध पाने की असफलता है; उसमें स्वाभाविक कसावट नहीं रह जाती, इसलिए 3 का संबंध (ii) से है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच विकल्प (A) में तीनों मिलान सही हैं। विकल्प (B) और (C) पहले ही पद का अर्थ गलत देते हैं। विकल्प (D) में पहला मिलान सही है, किंतु दूसरे और तीसरे पदों के अर्थ उलट दिए गए हैं। अतः केवल (A) पूरे मिलान के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष सही मिलान 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले स्पष्ट रूपक “पेंच खोलना का अर्थ पहचानें, फिर शेष दो मिलानों से विकल्प की पूरी जाँच करें।

6(ii). कवि को किस बात का डर था ?

[1 अंक]

- (A) कहीं बात बन न जाए
- (B) कहीं बात और न बिगड़ जाए
- (C) कहीं कोई बात न हो
- (D) कहीं बात पकड़ में न आ जाए

सही उत्तर: (B) कहीं बात और न बिगड़ जाए

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि अपनी बात को सहज बनाने के बजाय शब्दों के प्रयोग से अधिक उलझा देता है।
- “आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था का अर्थ आगे की पंक्तियों से स्पष्ट होता है।

चरण 1: डर का प्रसंग पहचानना कवि धैर्य से कठिनाई समझे बिना पेंच को और कसता जा रहा था। उसे आशंका थी कि इस जोर-जबरदस्ती से बात और बिगड़ जाएगी। आगे “बात की चूड़ी मर गई तथा “भाषा में बेकार घूमने लगी इसी आशंका के सच होने को प्रकट करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (B) इसी बिगड़ने के डर को व्यक्त करता है। (A) में बात बन जाने का डर बताया गया है, जबकि बात बनाना ही कवि का उद्देश्य था। (C) का कोई बात न होना इस प्रसंग का आशय नहीं है। (D) में बात पकड़ में आने की आशंका है, जबकि कवि समझ और अभिव्यक्ति की उलझन से जूझ रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि को डर था कि कहीं बात और न बिगड़ जाए। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: “जिसका मुझे डर था के ठीक बाद की पंक्तियाँ पढ़ें; चूड़ी मरने का परिणाम ही उस डर का संकेत देता है।

6(iii). 'इस करतब' के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) बात को सहज और सरल बना देने की ओर
- (B) अपने भाषिक ज्ञान और कौशल की ओर
- (C) श्रोताओं से मिल रही प्रशंसा की ओर
- (D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर

सही उत्तर: (D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर

हल:

अवधारणा:

- कविता में पेंच कसने का रूपक सहज बात को अनावश्यक भाषिक प्रयोगों से जटिल बनाने के लिए आया है।
- अर्थ की स्पष्टता के स्थान पर शब्दों का प्रदर्शन अभिव्यक्ति को बिगाड़ देता है।

चरण 1: काव्यांश का संकेत कवि कहता है कि वह पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसता चला जा रहा था। यहाँ पेंच कसना बात को सुलझाना नहीं, शब्दों के जाल में और उलझाना है। इसी क्रिया को कवि ने 'इस करतब' कहा है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (D) इस अर्थ को ठीक प्रकट करता है। (A) विपरीत है, क्योंकि बात सरल नहीं हो रही। (B) में भाषिक ज्ञान का उल्लेख है, पर यहाँ संकेत उसके अनावश्यक प्रदर्शन से उत्पन्न जटिलता की ओर है। (C) प्रशंसा उस करतब को बढ़ाने वाला प्रलोभन है, स्वयं करतब नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष 'इस करतब' का संकेत बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: संकेतवाची शब्द का अर्थ समझने के लिए उससे ठीक पहले आए पेंच कसने के रूपक को देखें।

6(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : बात का सही शब्द से जुड़ना ही सहज भावाभिव्यक्ति है।

कारण : प्रत्येक अभिव्यक्ति के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, अतः भाषा के प्रयोग में चमत्कार प्रदर्शन से परे अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
- (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (D) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- सही भाव के लिए उपयुक्त शब्द का चयन सहज और प्रभावी अभिव्यक्ति का आधार है।
- कथन और कारण के प्रश्न में दोनों की सत्यता के साथ उनका व्याख्यात्मक संबंध भी जाँचना चाहिए।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन सही है। जब बात उचित शब्दों से जुड़ती है, तब उसका भाव बिना उलझाव के पाठक तक पहुँचता है। यही सहज भावाभिव्यक्ति है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण भी सही है। यहाँ खास शब्दों का आशय प्रसंग और भाव के अनुरूप उपयुक्त शब्दों से है। चमत्कार दिखाने के लिए शब्दों को बलपूर्वक लगाने से बात का प्रभाव नष्ट होता है, इसलिए सावधानी आवश्यक है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प कारण स्पष्ट करता है कि सहज अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द क्यों चाहिए। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या है। (A) दोनों को गलत और (B) कारण को गलत बताते हैं, अतः असंगत हैं। (D) दोनों के बीच विद्यमान

व्याख्यात्मक संबंध को स्वीकार नहीं करता।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को अलग परखें, फिर देखें कि कारण सहज अभिव्यक्ति की आवश्यकता समझाता है या नहीं।

6(v). तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में कौन-सा भाव है ?

[1 अंक]

- (A) आक्रोश का
- (B) व्यंग्य का
- (C) प्रशंसा का
- (D) समानता का

सही उत्तर: (B) व्यंग्य का

हल:

अवधारणा:

- शब्दों का बाहरी अर्थ और पूरे प्रसंग में निहित भाव अलग हो सकते हैं।
- कवि शब्दाडंबर पर वाहवाही करने वाले श्रोताओं के विवेक पर व्यंग्य करता है।

चरण 1: प्रसंग से भाव पहचानना बात लगातार बिगड़ रही है, फिर भी तमाशबीन शाबाशी देते हैं। उनकी वाहवाही कवि को पेंच और कसने के लिए उकसाती है। इस विरोधाभास से कवि ऐसी खोखली प्रशंसा और भाषिक प्रदर्शन पर कटाक्ष करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (B) व्यंग्य का भाव सही है। (C) में प्रशंसा केवल शब्दों का सतही अर्थ है; कविता का निहित भाव व्यंग्य है। (A) आक्रोश के लिए यहाँ क्रोधपूर्ण विरोध नहीं है। (D) समानता का भाव भी इस प्रसंग में व्यक्त नहीं हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष तमाशबीनों की शाबाशी और वाहवाही में व्यंग्य का भाव है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: वाहवाही का भाव तय करते समय देखें कि उससे बात सँवर रही है या बिगड़ रही है; यही व्यंग्य का संकेत है।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘पतंग’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि ने प्रकृति में हो रहे परिवर्तनों का बाल-सुलभ चेष्टाओं से किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में शरद का खुला आकाश बच्चों की कल्पना और उत्साह के अनुकूल वातावरण बनाता है।
- प्रकृति की चमक, खुलापन और गति बालकों के उमंगपूर्ण क्रियाकलापों से जुड़ते हैं।

चरण 1: प्रकृति के परिवर्तन का आधार कविता में वर्षा के बीतने पर आकाश खुलता है और शरद का प्रकाश फैलता है। चमकीले संकेतों वाला सवेरा तथा दिशाओं में खुलता आकाश गतिशील वातावरण रचते हैं। यह वर्णन केवल ऋतु की जानकारी नहीं देता, बल्कि बच्चों के पतंग उड़ाने की तैयारी और मनोदशा को भी सामने लाता है।

चरण 2: बालचेष्टाओं से संबंध प्रकृति के खुलेपन के साथ बच्चों की कल्पना भी विस्तार पाती है। वे छतों पर दौड़ते, उछलते और पतंग के साथ ऊँचाइयों की ओर देखते हैं। उनके शरीर और मन की हलचल का सामंजस्य उजले, खुले और गतिशील प्राकृतिक परिवेश से बनता है। उत्तर में इसी पारस्परिक अनुकूलता को केंद्र में रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर ‘पतंग’ में वर्षा के बाद शरद का उजला सवेरा और खुला आकाश बच्चों की उमंग से जुड़ते हैं। सूर्य

और दिशाओं की चमक उनके पतंग उड़ाने के उत्साह को बढ़ाती है। बच्चे छतों पर दौड़ते, उछलते और आकाश की ऊँचाइयाँ नापते हैं। इस प्रकार प्रकृति का खुलापन तथा गति बालमन की स्वतंत्र कल्पना और चंचल चेष्टाओं के अनुकूल बन जाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने शरद की उज्ज्वलता और खुले आकाश का सामंजस्य बच्चों की उन्मुक्त कल्पना, गति और पतंग उड़ाने की उमंग से स्थापित किया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रकृति का एक परिवर्तन और उससे जुड़ी बालचेष्टा साथ लिखें; केवल ऋतु-वर्णन तक सीमित न रहें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता में ‘अस्थिर सुख पर दुख की छाया’ का क्या अभिप्राय है ? दुख की छाया से कवि ने किस ओर संकेत किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है।
- धनी शोषक का वैभव अस्थायी है; परिवर्तन की आशंका उसके सुख के बीच भय बनकर उपस्थित रहती है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग और आशय कविता में संपन्न वर्ग अपने वैभव और सुविधाओं के बीच भी भयभीत है। उसका सुख स्थिर नहीं है, क्योंकि वह सामाजिक विषमता और शोषण पर आधारित है। बादल की गर्जना परिवर्तन की सूचना देती है और उसके मन में अपने प्रभुत्व के समाप्त होने की आशंका पैदा करती है। इसीलिए सुख के ऊपर दुख की छाया बनी हुई है।

चरण 2: दुख की छाया का संकेत दुख की छाया से आशय सामान्य प्राकृतिक विपत्ति या सभी मनुष्यों के जीवन का दुख मात्र नहीं है। यहाँ संकेत क्रांति से भयभीत धनिक वर्ग की मानसिक दशा की ओर है। जनजागरण और परिवर्तन उसे अपना संचित वैभव तथा अधिकार खोने की आशंका से भर देते हैं। इसके विपरीत शोषित किसान उसी बादल को आशा के रूप में पुकारता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर ‘अस्थिर सुख पर दुख की छाया’ का अर्थ है कि धनिकों का वैभव स्थायी नहीं है। सुख-सुविधाओं में रहते हुए भी वे उसे खो देने की आशंका से भयभीत हैं। बादल की गर्जना क्रांति और परिवर्तन का संकेत देती है। दुख की छाया से कवि ने शोषक वर्ग के मन में जनक्रांति द्वारा अपने धन, सत्ता और प्रभुत्व के नष्ट होने के भय की ओर संकेत किया है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति शोषण पर आधारित अस्थायी वैभव और क्रांति की आशंका से घिरे संपन्न वर्ग के भय को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर समझाएँ कि वही परिवर्तन किसान के लिए आशा और शोषक के लिए भय क्यों है।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘छोटा मेरा खेत’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि ‘बीज गल गया निःशेष’ पंक्ति से क्या तात्पर्य है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में कागज़ का पन्ना खेत और कवि की अनुभूति बीज का प्रतीक है।
- बीज का गलना नष्ट हो जाना भर नहीं, अपनी अलग सत्ता छोड़कर नए सृजन का आधार बनना है।

चरण 1: प्रतीकों का संबंध समझें खेत में बोया बीज मिट्टी में गलकर अंकुर उत्पन्न करता है। उसी प्रकार हृदय में उठा भाव कल्पना और शब्दों का आधार बनता है। यहाँ खेती की प्रक्रिया द्वारा कविता की रचना-प्रक्रिया समझाई गई है। बीज को केवल वास्तविक अनाज मानने से पंक्ति का काव्यगत अर्थ अधूरा रह जाएगा। कविता में इस बिंब से अनुभूति और रचना का अविच्छिन्न संबंध स्थापित होता है।

चरण 2: अनुभूति से रचना बनने की प्रक्रिया कवि का आरंभिक भाव कल्पना के सहारे विकसित होकर शब्दों के अंकुर, पल्लव और

पुष्प बनता है। इस रूपांतरण में मूल अनुभूति अपनी स्वतंत्र पहचान खो देती है, पर उसका सार रचना में व्याप्त रहता है। अतः निःशेष गलने का आशय भाव का व्यर्थ नष्ट होना नहीं, सृजन में पूरी तरह समाहित होना है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में बीज कवि की अनुभूति का प्रतीक है। जैसे बीज मिट्टी में गलकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व मिटा देता है और पौधा बनता है, वैसे ही मूल अनुभूति कल्पना तथा शब्दों में ढलकर कविता बन जाती है। वह अलग से पहचान में नहीं आती, किंतु पूरी रचना में समाई रहती है। इस प्रकार उसका मिटना सार्थक सृजन का आधार बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष मूल अनुभूति अपनी अलग पहचान खोकर कविता के संपूर्ण रूप में समा जाती है।

त्वरित सुझाव: बीज, अंकुर और फसल के अर्थ पहले अनुभूति, शब्द और कविता से जोड़ें; तभी गलने का सकारात्मक आशय स्पष्ट होगा।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘दिन जल्दी-जल्दी ढलता है’ कविता में कवि ने यह क्यों कहा है – ‘मैं होऊँ किसके हित चंचल’ ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में प्रतीक्षा करने वाला प्रिय जीवन में उत्साह और गति लाता है।
- पक्षियों के घर लौटने की उत्सुकता के बरक्स कवि का अकेलापन उभरता है।

चरण 1: पक्षियों और कवि की स्थिति का अंतर पक्षियों के बच्चे नीड़ों में प्रतीक्षा करते हैं, इसलिए वे उत्साह से लौटते हैं। कवि अपने जीवन में ऐसी प्रतीक्षा और अपनत्व का अभाव अनुभव करता है। इसी अंतर से प्रश्न में दी गई पंक्ति का भाव स्पष्ट होता है। इस प्रश्न में समय के तेज़ी से बीतने की चिंता भी निहित है। ढलता दिन लौटने का संकेत देता है, किंतु प्रिय का अभाव कवि के पगों में गति लाने के स्थान पर उन्हें शिथिल कर देता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि के जीवन में कोई प्रिय व्यक्ति उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा है। पक्षियों के बच्चों की तरह उसे बुलाने वाला कोई नहीं है। इसलिए वह सोचता है कि किसके लिए उत्साहित होकर जल्दी लौटे। प्रिय के अभाव से वह अकेलापन और शिथिलता अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह कथन कवि की प्रियहीनता, अकेलेपन और उत्साह के अभाव को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पक्षियों की प्रतीक्षा करते बच्चों और कवि के प्रियहीन जीवन का अंतर अवश्य जोड़ें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘सूर्योदय के साथ कौन-सा जादू टूट जाता है ? ‘उषा’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषा में भोर के आकाश के बदलते रंग बिंबों द्वारा उभरते हैं।
- सूर्योदय होते ही उषा का क्षणिक, रहस्यमय आकर्षण समाप्त हो जाता है।

चरण 1: जादू का आशय पहचानें नीला आकाश, शंख और राख से लीपे चौके जैसे बिंब भोर के बदलते रूप रचते हैं। ये दृश्य किसी वास्तविक टोने का संकेत नहीं, प्रकृति के सम्मोहक सौंदर्य का अनुभव हैं। कविता के अंत में सुबह का जादू टूटने की बात इन बिंबों के क्षणभंगुर होने को स्पष्ट करती है। रात के बाद और पूरे दिन के पहले का यह संधिकाल ही कविता का मुख्य दृश्य है। इसलिए उत्तर में केवल अंधकार मिटने की बात पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सूर्योदय के साथ उषा के रंग बदलते आकाश और मनोहारी दृश्यों का जादू टूट जाता है। भोर का

नीला, श्वेत और लाल आकाश अनोखे बिंब रचकर मुग्ध करता है। सूर्य निकलते ही यह क्षणिक रहस्यमय सौंदर्य सामान्य दिन के प्रकाश में बदल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह उषा के बदलते रंगों और अद्भुत सौंदर्य का जादू है जो सूर्योदय पर समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: जादू को प्रकृति के सम्मोहन के अर्थ में समझाएँ और सूर्योदय से उस दृश्य के बदलने का संबंध लिखें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है, बालक तो हई चाँद पै ललचाया है’ – पंक्ति में बाल मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन हुआ है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाइयों में घरेलू जीवन और बच्चे की सहज भावनाओं के चित्र मिलते हैं।
- आकर्षक वस्तु पाने की इच्छा और उसकी प्राप्ति के लिए ज़िद करना बाल-मनोविज्ञान का स्वाभाविक पक्ष है।

चरण 1: पंक्ति में व्यवहार के संकेत चाँद का आकर्षण बालक को उसे पाने के लिए प्रेरित करता है। ठुनकना और ज़िद करना बताते हैं कि वह अपनी इच्छा तुरंत पूरी कराना चाहता है। वह अभी वास्तविक दूरी और प्राप्ति की सीमा नहीं समझता। बच्चे की माँ से अपनी इच्छा पूरी कराने की अपेक्षा भी यहाँ प्रकट है। उसके लिए चाँद कोई दूर स्थित खगोलीय पिंड नहीं, पाने योग्य सुंदर वस्तु है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इन पंक्तियों में बच्चे की सहज जिज्ञासा, चाँद के प्रति आकर्षण और उसे पाने की हठपूर्ण इच्छा दिखाई गई है। वह चाँद को खिलौने जैसी सुंदर वस्तु समझकर माँगता है। इच्छा पूरी न होने पर ठुनकना उसकी बालसुलभ सरलता और अबोधता को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति बालक के आकर्षण, अबोध कल्पना और मनचाही वस्तु पाने के हठ को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: ठुनकने को शरारत भर न कहें; उसे चाँद पाने की इच्छा और बालक की अबोधता से जोड़ें।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘चूड़ाकर्म’ से क्या अभिप्राय है ? अपने चूड़ाकर्म की उपयुक्तता सिद्ध करने के लिए भक्तिन ने शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका को दिया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण भक्तिन में सेविका अपनी मान्यताओं का दृढ़ता से समर्थन करती है।
- चूड़ाकर्म यहाँ सिर मुँड़ाने की क्रिया है; प्रसंग में शास्त्र का उपयोग अपनी प्रथा के औचित्य के लिए होता है।

चरण 1: चूड़ाकर्म का प्रसंग लेखिका को स्त्रियों का सिर मुँड़ाना अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने भक्तिन को रोका, लेकिन भक्तिन अपनी आदत छोड़ने के स्थान पर उसे शास्त्रसम्मत सिद्ध करने लगी। इसलिए प्रश्न का पहला भाग सामान्य संस्कार की विस्तृत परिभाषा नहीं, इसी प्रसंग में सिर मुँड़वाने का अर्थ माँगता है।

चरण 2: भक्तिन का तर्क और लेखिका की प्रतिक्रिया भक्तिन ने शास्त्र का नाम लेकर अपने आचरण का समर्थन किया। लेखिका के पूछने पर उसने तीर्थयात्रा और मुँड़न से सिद्धि मिलने का सूत्र सुना दिया। लेखिका यह जान न सकी कि वह किस शास्त्र का सूत्र है और मौन हो गई। भक्तिन अपना सिर मुँड़वाती रही। इससे शास्त्र को सुविधानुसार समझने की उसकी प्रवृत्ति दिखाई देती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर चूड़ाकर्म का अर्थ सिर मुँड़वाना है। लेखिका को स्त्रियों का सिर मुँड़ाना अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने

भक्तिन को रोका तो उसने इसे शास्त्रसम्मत बताया। प्रमाण पूछने पर उसने तीर्थ जाने और मुँड़न से सिद्धि मिलने का कथन सुनाया। लेखिका उसका शास्त्रीय स्रोत न जान सकीं और चुप हो गईं। इस प्रकार भक्तिन ने अपनी सुविधा के अनुसार शास्त्र का प्रश्न सुलझा लिया।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन ने मुँड़न की अपनी प्रथा को शास्त्र का सहारा देकर उचित ठहराया और लेखिका को मौन कर दिया।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद लेखिका का विरोध, भक्तिन का शास्त्रीय तर्क और लेखिका की मौन प्रतिक्रिया क्रम से लिखें।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“सूखे के समय इंदर सेना पर पानी डालना कहाँ तक सही है ?” – ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ से उद्धृत इस पंक्ति के संदर्भ में लिखिए कि जीजी ने लेखक के मन की दुविधा का समाधान किस प्रकार किया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लेखक के तर्कशील मन और जीजी की लोक-आस्था के बीच उत्पन्न दुविधा की समझ पर आधारित है।
- जीजी के तर्क में त्याग, दान और पहले कुछ देकर अधिक पाने की भावना प्रमुख है।

चरण 1: दुविधा का कारण सूखे में पानी की कमी थी। इसलिए लेखक को इंदर सेना पर पानी डालना व्यर्थ और अनुचित लगता था। उसे यह विरोधाभास परेशान करता था कि जिस पानी को बचाने की आवश्यकता है, उसी को वर्षा की आशा में बहाया जा रहा है। जीजी ने इस आपत्ति का उत्तर केवल परंपरा बताकर नहीं, बल्कि त्याग और दान का अर्थ समझाकर दिया।

चरण 2: जीजी के तर्क की व्याख्या जीजी ने समझाया कि किसी वस्तु की कमी होने पर भी उसे दूसरों के लिए देना वास्तविक त्याग है। पानी का यह दान वर्षा की कामना से जुड़ा है। जैसे किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास का बीज धरती में डालता है, वैसे ही पानी देकर अधिक पानी पाने की आशा की जाती है। यह उपमा लेखक की व्यावहारिक आपत्ति के सामने लोकविश्वास का पक्ष रखती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर जीजी ने लेखक को समझाया कि पाने से पहले देना आवश्यक है। अभाव में किया गया दान ही सच्चा त्याग है। जैसे किसान फसल पाने के लिए बीज धरती में बोता है, वैसे ही इंदर सेना पर पानी डालना वर्षा पाने की कामना का प्रतीक है। इस प्रकार उन्होंने त्याग और लोक-आस्था के तर्क से लेखक की दुविधा का समाधान किया।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी ने पानी के दान को त्याग और वर्षा की आशा से जोड़कर लेखक की शंका का समाधान किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पानी की कमी, त्याग और किसान के बीज बोने की उपमा को परस्पर जोड़ें।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ में श्रम विभाजन का आधार किसे और क्यों नहीं माना जा सकता ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न जन्म पर आधारित जाति-व्यवस्था और योग्यता पर आधारित श्रम-विभाजन का अंतर जाँचता है।
- लेखक के अनुसार काम का चुनाव व्यक्ति की रुचि, क्षमता और दक्षता से होना चाहिए।

चरण 1: अस्वीकार्य आधार पहचानना श्रम-विभाजन का आधार जाति अथवा जन्म को नहीं माना जा सकता। जन्म से किसी व्यक्ति की योग्यता, रुचि या व्यावसायिक क्षमता निर्धारित नहीं होती। किसी विशेष परिवार में जन्म लेने से यह सिद्ध नहीं होता कि वह व्यक्ति उसी परिवार का परंपरागत कार्य करने के लिए उपयुक्त होगा।

चरण 2: कारण स्पष्ट करना जाति-प्रथा व्यक्ति को वंशानुगत पेशे में बाँध देती है और उसकी स्वाभाविक क्षमताओं के विकास में बाधा

डालती है। वह काम बदलने की स्वतंत्रता भी रोकती है। इससे व्यक्ति अरुचिकर काम करने के लिए विवश हो सकता है और समाज उसकी वास्तविक प्रतिभा के लाभ से वंचित रह जाता है। इसलिए यह व्यवस्था श्रम के स्वाभाविक विभाजन के बजाय श्रमिकों का स्थायी विभाजन करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन का आधार जाति या जन्म को नहीं माना जा सकता, क्योंकि जन्म व्यक्ति की रुचि, योग्यता और कार्यक्षमता का प्रमाण नहीं है। जाति-प्रथा मनुष्य को वंशानुगत व्यवसाय में बाँधकर काम चुनने और बदलने की स्वतंत्रता छीनती है। इससे प्रतिभा का विकास तथा श्रम की दक्षता बाधित होती है। श्रम-विभाजन का आधार व्यक्ति की क्षमता और रुचि होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष जाति या जन्म के स्थान पर व्यक्तिगत योग्यता, क्षमता और रुचि श्रम-विभाजन का उचित आधार हैं।

त्वरित सुझाव: पहले अस्वीकार्य आधार स्पष्ट लिखें, फिर स्वतंत्रता और दक्षता पर उसके प्रभाव बताएँ।

10. शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना-इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन – धूप, वर्षा, आँधी, लू – अपने आप में सत्य नहीं हैं ? उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !

[5 अंक]

10(i). शिरीष का पेड़ लेखक में कौन-सी भावना जगा देता है ?

[1 अंक]

- (A) भ्रातृत्व की
- (B) सद्भाव की
- (C) अजेय मंत्र की
- (D) सौंदर्य बोध की

सही उत्तर: (C) अजेय मंत्र की

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों और शिरीष तथा गांधी जी की तुलना से सही विकल्प चुना जाता है।
- उत्तर चुनते समय अंश के केंद्रीय गुण, आंतरिक दृढ़ता और प्रतिकूलता में सरसता पर ध्यान दें।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण शिरीष की सरसता चिलचिलाती धूप में भी बनी रहती है। लेखक के मन में उठती ऊर्ध्वमुखी तरंगें विपरीत परिस्थितियों से पराजित न होने की प्रेरणा हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) भ्रातृत्व का अर्थ भाईचारा और (B) सद्भाव का अर्थ आपसी मेल है; यहाँ संबंधों की चर्चा नहीं है। (D) सौंदर्य बोध बाहरी सुंदरता तक सीमित है, जबकि बल अजेय जीवन-शक्ति पर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) अजेय मंत्र की है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्दों को भीतर की स्थिरता और बाहर की कठिनाइयों के संबंध से मिलाएँ।

10(ii). 'क्या ये बाह्य ... अपने आप में सत्य नहीं हैं ?' प्रश्न के द्वारा लेखक ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) मौसम परिवर्तन की दार्शनिक व्याख्या की ओर
- (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर
- (C) प्राकृतिक आपदाओं से नहीं डरने की ओर
- (D) प्राकृतिक आपदाओं को स्वीकार करने की ओर

सही उत्तर: (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों और शिरीष तथा गांधी जी की तुलना से सही विकल्प चुना जाता है।
- उत्तर चुनते समय अंश के केंद्रीय गुण, आंतरिक दृढ़ता और प्रतिकूलता में सरसता पर ध्यान दें।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण धूप, वर्षा, आँधी और लू वास्तविक बाहरी परिस्थितियाँ हैं। लेखक प्रश्न करता है कि इनके बीच भीतर स्थिर कैसे रहा जा सकता है। इससे जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार करके आंतरिक सत्य और स्थिरता खोजने का संकेत मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) केवल मौसम की दार्शनिक व्याख्या तक सीमित है। (C) केवल न डरने और (D) केवल आपदाओं को स्वीकारने की बात कहते हैं। इनमें प्रश्न का आंतरिक स्थिरता और सत्य की खोज वाला पक्ष पूरा नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्दों को भीतर की स्थिरता और बाहर की कठिनाइयों के संबंध से मिलाएँ।

10(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए :

[1 अंक]

- (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।
- (B) 'शिरीष' प्रतिकूल परिस्थितियों में विचलित हो जाता है।
- (C) 'शिरीष' युद्ध की स्थिति में सहनशक्ति खो देता है।
- (D) 'शिरीष' विपरीत समय में हतोत्साहित हो जाता है।

सही उत्तर: (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों और शिरीष तथा गांधी जी की तुलना से सही विकल्प चुना जाता है।
- उत्तर चुनते समय अंश के केंद्रीय गुण, आंतरिक दृढ़ता और प्रतिकूलता में सरसता पर ध्यान दें।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण गद्यांश में प्रश्न है कि बाहरी परिवर्तनों के बीच स्थिर रहा जा सकता है या नहीं। उत्तर मिलता है कि शिरीष रह सका है। उसकी कोमलता के साथ कठोरता जीवन-शक्ति और कठिन समय में धैर्य का प्रमाण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) का विचलित होना, (C) का सहनशक्ति खो देना और (D) का हतोत्साहित होना गद्यांश के विपरीत हैं। तीनों शिरीष को कमजोर दिखाते हैं, जबकि लेखक उसकी अडिग सरसता से प्रेरणा प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है; शिरीष जिजीविषा और कोलाहल के बीच धीरता का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्दों को भीतर की स्थिरता और बाहर की कठिनाइयों के संबंध से मिलाएँ।

10(iv). गद्यांश में शिरीष, गांधी जी और अवधूत तीनों का उल्लेख हुआ है, तीनों में क्या समानता थी ?

[1 अंक]

- (A) तीनों ने अपना जीवन परोपकार में बिताया।
- (B) तीनों को समाज में लोकप्रियता प्राप्त थी।
- (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।
- (D) सभी ने सामाजिक जीवन का बहिष्कार किया।

सही उत्तर: (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों और शिरीष तथा गांधी जी की तुलना से सही विकल्प चुना जाता है।
- उत्तर चुनते समय अंश के केंद्रीय गुण, आंतरिक दृढ़ता और प्रतिकूलता में सरसता पर ध्यान दें।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण शिरीष और गांधी जी को अवधूत कहा गया है। दोनों बाहरी वातावरण से रस ग्रहण करते हुए भीतर स्थिर बने रहते हैं। उनकी कोमलता संवेदनशीलता है और कठोरता स्वभाव की दृढ़ता; ये परस्पर विरोधी गुण नहीं हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) परोपकार और (B) लोकप्रियता का प्रत्यक्ष आधार इस अंश में नहीं है। (D) सामाजिक जीवन के बहिष्कार का दावा भी अंश नहीं करता। समानता प्रतिकूल परिवेश के बीच ढलते हुए अपने आंतरिक गुण बनाए रखने में है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे, है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्दों को भीतर की स्थिरता और बाहर की कठिनाइयों के संबंध से मिलाएँ।

10(v). गद्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्रेम का मोह से श्रेष्ठ होना
- (B) समानता का असमानता से श्रेष्ठ होना
- (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना
- (D) सत्य का असत्य भाव से श्रेष्ठ होना

सही उत्तर: (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों और शिरीष तथा गांधी जी की तुलना से सही विकल्प चुना जाता है।
- उत्तर चुनते समय अंश के केंद्रीय गुण, आंतरिक दृढ़ता और प्रतिकूलता में सरसता पर ध्यान दें।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण गद्यांश का केंद्र बाहरी कठिनाइयों के बीच भी भीतरी स्थिरता बनाए रखना है। शिरीष और गांधी जी की तुलना दिखाती है कि कोमलता के साथ दृढ़ता संभव है। बाहरी दबावों पर विजय का स्रोत उनका आंतरिक बल है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में प्रेम और मोह तथा (B) में समानता और असमानता की तुलना है, जिसका अंश में विवेचन नहीं है। (D) सत्य और असत्य का सामान्य विरोध बताता है। यहाँ मुख्य बल कठिन परिस्थितियों में आत्मबल की अजेयता पर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्दों को भीतर की स्थिरता और बाहर की कठिनाइयों के संबंध से मिलाएँ।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी के आधार पर उन जीवन-मूल्यों की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए जिनमें वर्तमान समय में परिवर्तन आ रहा है।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू और उनके परिवार के बीच का अंतर दो पीढ़ियों के जीवन-दृष्टिकोण का अंतर है।
- जीवन-मूल्यों की समीक्षा में पारिवारिक आत्मीयता, बुजुर्गों के अनुभव और सादगी की तुलना नए उपभोक्तावादी दृष्टिकोण से करनी चाहिए। परिवर्तन का मूल्यांकन उदाहरणों से हो, केवल नई पीढ़ी की निंदा से नहीं।

चरण 1: प्रसंग और उदाहरण पहचानिए यशोधर बाबू किशनदा की सादगी, आत्मीयता और पुराने संस्कारों को आदर्श मानते हैं। दूसरी ओर, उनके बच्चे आधुनिक सुविधाओं, अच्छी कमाई और उत्सव के नए ढंग को महत्त्व देते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर आयोजित पार्टी इसी अंतर को सामने लाती है। पिता के लिए आत्मीय संबंध महत्त्वपूर्ण हैं, जबकि परिवार का उत्सव उनके लिए अपरिचित सांस्कृतिक रूप ले लेता है।

चरण 2: परिवर्तन का संतुलित मूल्यांकन कीजिए बच्चों का उत्सव आयोजित करना या उपहार देना स्नेह की अनुपस्थिति सिद्ध नहीं करता। समस्या तब दिखाई देती है जब अपनापन व्यक्त करने का ढंग दूसरे की संवेदना और अनुभव की उपेक्षा करने लगता है। इसलिए उत्तर में बाहरी आधुनिकता और आंतरिक आत्मीयता के अंतर को स्पष्ट करें। प्रत्येक नए व्यवहार को गलत और प्रत्येक पुराने व्यवहार को श्रेष्ठ मानना कहानी की जटिलता घटा देगा।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों का आदर्श उत्तर ‘सिल्वर वैडिंग’ में सादगी, आत्मीयता, बुजुर्गों के सम्मान और पारिवारिक संवाद जैसे मूल्यों में परिवर्तन दिखाई देता है। यशोधर बाबू किशनदा के सादे, आत्मीय जीवन से प्रभावित हैं, जबकि नई पीढ़ी आर्थिक सफलता, सुविधाओं और आधुनिक उत्सवों को महत्त्व देती है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगांठ की पार्टी उनके लिए अपरिचित संस्कृति का प्रतीक है। बेटे का ड्रेसिंग गाउन उपहार स्नेह भी दर्शाता है, किंतु पहनावे पर उसकी सलाह पिता को असहज करती है। कहानी आधुनिकता को पूरी तरह नकारती नहीं; वह बताती है कि साधनों और व्यवहार में बदलाव के साथ बुजुर्गों की संवेदना, परस्पर सम्मान और संवाद बचाए रखना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी बदलती जीवन-शैली के बीच आत्मीयता, सम्मान और संवाद बनाए रखने की आवश्यकता सामने लाती है। पीढ़ियों के बीच दूरी का समाधान पारस्परिक संवेदनशीलता में है।

त्वरित सुझाव: पहले दो बदलते मूल्य लिखें, फिर पार्टी और उपहार के प्रसंग जोड़ें; अंत में आधुनिकता और आत्मीयता के संतुलन का निष्कर्ष दें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ’ के कथानायक का मन खेती के काम की अपेक्षा पाठशाला जाने के लिए क्यों व्याकुल था ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में शिक्षा की इच्छा आर्थिक अभाव, श्रम और पारिवारिक बाधाओं के बीच विकसित होती है।
- कथानायक खेती का अपमान नहीं करता; वह शिक्षा को अपनी स्थिति बदलने और व्यक्तित्व विकसित करने का अवसर मानता है। उत्तर में उसकी व्याकुलता के आर्थिक और मानसिक दोनों कारण स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: परिस्थिति और आकांक्षा का संबंध समझिए पिता ने कथानायक की पढ़ाई छुड़ाकर उसे खेती के काम में लगा दिया था। खेत का एकरस और कठोर श्रम उसकी जिज्ञासा को संतुष्ट नहीं करता था। पढ़ाई छूटने के कारण वह अपने साथियों से पीछे रह रहा था। उसे यह विश्वास होने लगा था कि खेती के भरोसे उसके परिवार की गरीबी दूर नहीं होगी; शिक्षा रोजगार और बेहतर भविष्य का रास्ता खोल सकती है।

चरण 2: पाठशाला के आकर्षण को स्पष्ट कीजिए पाठशाला उसके लिए पुस्तकों, सीखने, साथियों और आत्मविकास की दुनिया थी।

उसकी इच्छा केवल खेत के परिश्रम से बचना नहीं थी। पढ़ने की लगन इतनी प्रबल थी कि उसने खेती के काम के साथ भी पढ़ाई जारी रखने का प्रयास किया। उत्तर में भविष्य सुधारने की आकांक्षा और ज्ञान पाने की आंतरिक इच्छा को एक-दूसरे से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों का आदर्श उत्तर 'जूझ' का कथानायक पढ़ना चाहता था, किंतु पिता ने उसकी पढ़ाई छुड़ाकर उसे खेती में लगा दिया था। खेतों का कठोर, एकरस श्रम उसे मानसिक संतोष नहीं देता था। उसे लगता था कि खेती के सहारे गरीबी से छुटकारा पाना कठिन है। शिक्षा से नौकरी मिल सकती है और जीवन की दशा सुधर सकती है। पाठशाला में पुस्तकों, साथियों और सीखने के अवसरों का आकर्षण भी उसे खींचता था। पढ़ाई छूटने से पीछे रह जाने की पीड़ा उसकी व्याकुलता बढ़ाती थी। इसलिए पाठशाला उसके लिए केवल श्रम से विश्राम नहीं, बल्कि ज्ञान, आत्मविकास और बेहतर भविष्य की आशा थी।

चरण 4: निष्कर्ष कथानायक की व्याकुलता का मूल शिक्षा के प्रति लगन तथा गरीबी और सीमित अवसरों से बाहर निकलने की इच्छा थी। पाठशाला उसे अपने भविष्य को बदलने का साधन लगती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन कारण जोड़ें : खेती से गरीबी न मिटने का बोध, पढ़ाई के प्रति लगन और बेहतर भविष्य की आशा।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ के आधार पर शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक का औचित्य पाठ के केंद्रीय अनुभव और उसके प्रतीकात्मक अर्थ के आधार पर स्पष्ट होता है।
- मोहनजोदड़ो के अवशेष प्राचीन सभ्यता की जीवन-पद्धति, नगर-योजना और सांस्कृतिक चेतना के साक्ष्य हैं।

चरण 1: शीर्षक का आशय समझिए यहाँ अतीत का आशय सिंधु सभ्यता के उस जीवन से है जो अब इतिहास बन चुका है। दबे पाँव चलना शांति और सावधानी से प्रवेश करने की क्रिया है। लेखक खंडहरों को केवल निर्जीव पत्थरों की तरह नहीं देखता; वह इनके माध्यम से कभी यहाँ बसे मनुष्यों की उपस्थिति अनुभव करता है। शीर्षक ऐतिहासिक स्थल को देखने की इसी संवेदनशील दृष्टि का संकेत देता है।

चरण 2: पाठ के साक्ष्यों से संबंध जोड़िए नगर की सुनियोजित सड़कें, मकान, जल-निकासी की व्यवस्था और विशाल स्नानागार सभ्यता के व्यवस्थित सार्वजनिक जीवन का परिचय देते हैं। लेखक इन अवशेषों के बीच वर्तमान में रहते हुए भी प्राचीन काल की ओर लौटता है। वहाँ की नीरवता में उसे बीते समय की आहट मिलती है। यह यात्रा किसी शासक के युद्ध या विजय की कथा नहीं, साधारण नागरिक जीवन और संस्कृति को पहचानने की यात्रा है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘अतीत में दबे पाँव’ शीर्षक सर्वथा सार्थक है। लेखक मोहनजोदड़ो के खंडहरों में घूमते हुए हजारों वर्ष पुरानी सिंधु सभ्यता के जीवन में प्रवेश करता है। सड़कें, घर, नालियाँ और विशाल स्नानागार उसे तत्कालीन मनुष्यों की विकसित जीवन-दृष्टि का अनुभव कराते हैं। यहाँ अतीत केवल इतिहास का विषय नहीं, आसपास उपस्थित जीवन बन जाता है। ‘दबे पाँव’ में उस शांत, सावधान और संवेदनशील यात्रा का भाव है, जिसमें लेखक बीते समय की नीरवता को भंग किए बिना उसकी आहट सुनना चाहता है। इस प्रकार शीर्षक पुरातात्विक अवशेषों के बीच जीवंत अतीत की खोज को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष शीर्षक मोहनजोदड़ो के अवशेषों के बीच प्राचीन जीवन को शांत और संवेदनशील ढंग से अनुभव करने की यात्रा को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के दोनों अंशों का अर्थ बताकर नगर के अवशेषों और लेखक के अनुभव से उनका संबंध जोड़िए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ में ‘पैसा पावर है’ – लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में धन की क्रय-शक्ति और बाज़ार के आकर्षण का संबंध स्पष्ट किया गया है।
- पैसा खरीदने की क्षमता देता है; विवेक के बिना यही क्षमता अनावश्यक खरीद की ओर ले जाती है।

चरण 1: कथन का प्रसंग समझिए लेखक का मित्र बाज़ार से बहुत-सा सामान खरीद लाता है। खरीद का आधार केवल वास्तविक आवश्यकता नहीं रहता; जब में पर्याप्त पैसा होने से यह विश्वास पैदा होता है कि जो अच्छा लगे, उसे लिया जा सकता है। इसी प्रसंग में पैसे की ताकत सामने आती है। पैसा साधन है, लेकिन उसका सही उपयोग आवश्यकता पहचानने पर निर्भर करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर लेखक ने पैसे को पावर इसलिए कहा है क्योंकि वह वस्तुएँ खरीदने की सामर्थ्य और मन में अपनी शक्ति का विश्वास पैदा करता है। जब भरी होने पर व्यक्ति बाज़ार के आकर्षण में पड़कर आवश्यकता के बिना भी वस्तुएँ खरीदने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष पैसे की क्रय-शक्ति व्यक्ति को समर्थ होने का बोध देती है और बाज़ार का आकर्षण उसे अनावश्यक खरीद के लिए प्रेरित कर सकता है।

त्वरित सुझाव: पावर का अर्थ सामाजिक प्रतिष्ठा तक सीमित न करें; खरीदने की सामर्थ्य और अनावश्यक खरीद का संबंध बताइए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के आधार पर लिखिए कि महामारी की त्रासदी झेल रहे लोगों पर ढोल की आवाज़ का क्या प्रभाव पड़ता था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोल की ध्वनि महामारी से त्रस्त ग्रामीणों के लिए जीवन-शक्ति और मानसिक संबल का प्रतीक है।
- कथा में भयपूर्ण वातावरण और ढोलक की जीवंत लय के अंतर से उसका प्रभाव स्पष्ट होता है।

चरण 1: महामारी की स्थिति समझिए गाँव में बीमारी और मौत ने भय, निराशा तथा असहायता फैला दी थी। रात का सन्नाटा इस भय को और गहरा करता था। ऐसे वातावरण में लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज़ लोगों तक पहुँचती थी और उन्हें किसी जीवित, संघर्षशील शक्ति की उपस्थिति का अनुभव कराती थी। इससे उनका अकेलापन घटता था और मन का धैर्य लौटता था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर महामारी से भयभीत और निराश लोगों को ढोल की आवाज़ साहस तथा सांत्वना देती थी। उसकी लय रात के भयानक सन्नाटे को तोड़कर उनके भीतर जीने की इच्छा जगाती थी। वे कुछ समय के लिए मृत्यु का भय और अपनी पीड़ा भूल जाते थे।

चरण 3: निष्कर्ष ढोल की आवाज़ महामारी के बीच लोगों को भय से उबरने, पीड़ा भूलने और जीवन के संघर्ष का सामना करने का संबल देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोल के प्रभाव को बीमारी का उपचार न बताएँ; भय घटने और जीने का साहस मिलने पर ध्यान दीजिए।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन और महादेवी का संबंध सेवा के औपचारिक बंधन से आगे बढ़कर आत्मीय सहचर्य का संबंध बन जाता है।
- भक्तिन का दृढ़ स्वभाव और समर्पण लेखिका की दिनचर्या तथा जीवन-पद्धति पर प्रभाव डालते हैं।

चरण 1: प्रभाव के ठोस आधार पहचानिए भक्तिन लेखिका की आवश्यकताओं का ध्यान रखती थी, किंतु उसका व्यक्तित्व निष्क्रिय सेविका का नहीं था। उसके अपने दृढ़ विश्वास और व्यवहार के नियम थे। इसलिए साथ रहते हुए केवल भक्तिन ही लेखिका के अनुसार नहीं बदली; लेखिका को भी उसके आग्रहों और जीवन-व्यवहार के अनुरूप अपने को ढालना पड़ा।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर भक्तिन ने सेवा, समर्पण और आत्मीयता से महादेवी के जीवन को प्रभावित किया। उसके दृढ़ स्वभाव के कारण लेखिका को अपने खान-पान और रहन-सहन में भी परिवर्तन करना पड़ा। वह साधारण सेविका के स्थान पर उनकी विश्वस्त सहचरी और जीवन का अभिन्न अंग बन गई।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन ने आत्मीय सेवा और अपने दृढ़ व्यक्तित्व से लेखिका की दिनचर्या तथा जीवन-पद्धति को प्रभावित किया और उनके जीवन में सहचरी का स्थान पाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल सेवा का उल्लेख न करें; भक्तिन के दृढ़ व्यक्तित्व से लेखिका के जीवन में आए परिवर्तन भी जोड़िए।